Rohtas Mahila College, Sasaram, 27-04-20
Dr. Aman Munna, Dept of Psychology. Moon
B.A. part I (H) P-I, 2019-20

प्रश्न: चिंतन में भाषा के महत्व को स्पष्ट करें।

उत्तर:- चिंतन उच्च मानसिक प्रक्रिया है। व्यक्ति के सामने जब कोई समस्या उत्पन्न होती है तो उसमें चिंतन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। व्यक्ति जब किसी समस्या पर चिंतन करता है तो उसमें भाषा की आवश्यकता होती है या नहीं। इस विषय पर मनोवैज्ञानिकों में मतभेद रहा है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि चिंतन की क्रिया में भाषा अति आवश्यक है बिना भाषा के चिंतन संभव नहीं है दूसरी तरफ कुछेक मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि भाषा चिंतन में सहायक हो सकता है लेकिन बिना भाषा के भी चिंतन हो सकता है।

वाटसन - के अनुसार चिंतन के लिए भाषा आवश्यक है उन्होंने कहा कि भाषा और चिंतन में कोई मौलिक भेद नहीं है। उन्होंने चिंतन को आंतरिक सम्भाषण और वाचिक सम्भाषण कहा है। उन्होंने बच्चों के चिंतन का उदाहरण देते हुए कहा है कि जब बच्चे समस्याओं का समाधान करते हैं तो स्पष्ट रूप से धीरे-धीरे बोलते रहते हैं। वही बच्चे जब बड़े होकर इस पर नियंत्रण करके मन ही मन बोलकर समस्याओं का समाधान करते हैं।

ब्रेन (Brain) ने भी चिंतन में भाषा के महत्व को स्वीकार किया है। उनके अनुसार भाषा का काम चिंतन की क्रिया को सरल बना देता है। बच्चों और बड़ों के चिंतन में फर्क होता है। बड़े लोग अमूर्त चिंतन करते हैं। अमूर्त चिंतन के लिए उपयुक्त शब्द भंडार एवं व्याकरण नियमों के अनुसरण की योग्यता होनी चाहिए क्योंकि अमूर्त चिंतन भाषा पर ही आधारित होता है।

(Milner) मिलनर ने भी अपने अध्ययनों से स्पष्ट किया है कि व्यक्ति चिंतन की क्रिया में मन ही मन भाषा का प्रयोग करता है।

दूसरी ओर मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि चिंतन में

भाषा सहायक नहीं होता है। क्योंकि एक अध्ययन में बहरे और गूंगे बच्चों पर किया गया और उनकी चिंतन की तुलना सामान्य बच्चों से की गयी। परिणाम में पाया गया कि समस्या समाधान के लिए भाषा आवश्यक नहीं है। इस विचार का समर्थन हिलगार्ड ने भी किया है। उन्होंने कहा कि भाषा चिंतन से सम्बंधित है लेकिन समान नहीं है।

इस प्रकार, हम देखते हैं कई एक मनोवैज्ञानिक इसके पक्ष या एक इसके विरोधी है।

ब्राउन (Brown) ने सभी मनोवैज्ञानिकों के विचारों पर सहमति व्यक्त करते हुए कहा है कि भाषा चिंतन में सहायक है परन्तु भाषा के बिना भी चिंतन संभव है। उन्होंने यह कहा है कि जिस व्यक्ति का शब्द भंडार अधिक होता है वह किसी भी समस्या पर अनेक तरह से चिंतन करने में समर्थ होता है परन्तु जिसका शब्द भंडार सीमित होता है वह अधिक तरह से नहीं चिंतन कर सकता है। इससे तात्पर्य यह नहीं भाषा चिंतन के लिए आवश्यक है, बल्कि भाषा के अभाव में भी चिंतन की क्रिया हो सकती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि भाषा का चिंतन एवं समस्या समाधान के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके द्वारा चिंतन आसान हो जाता है। परन्तु यह कहना ठीक नहीं है कि भाषा के अभाव में चिंतन नहीं हो सकता। वास्तव में भाषा के अभाव में भी चिंतन की क्रिया हो सकती है।